विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक o7-01-2021

वर्ग पंचम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

भाषा मे " कर्ता "कर्म " और " क्रिया " इन को लेके वाक्य बनता है। कभी कर्म रहेगा कभी नहीं रहेगा। एक वाक्य लेते है।

बालक पुस्तक पढ़ता है। इस वाक्य में बालक " कर्ता " है, पुस्तक "कर्म " है और पढ़ता है " क्रिया " है।

बालक पुस्तक पढ़ता है। (सकर्मक)

कर्ता " "कर्म " " क्रिया "

जब प्रश्न पूछते है कौन पढ़ता है? तो उत्तर मिलता है। बालक तो यहा बालक (नाम) कर्ता है।जब प्रश्न पूछते है "बालक क्या पढ़ता है?" तो उत्तर मिलता है। पुस्तक पढ़ता है, तो यहा पुस्तक कर्म है। जब प्रश्न पूछते है बालक क्या करता है? तो उत्तर मिलता है। पढ़ता है तो यहा 'पढ़ता है' यह क्रिया है।

दूसरा एक वाक्य देखते है। = बालक हसता है। इस वाक्य में बालक "कर्ता " है और "हसता है "क्रिया " है परन्तु "कर्म " नहीं है।

बालक ----- हसता है। (अकर्मक)

कर्ता ” “कर्म ” “ क्रिया ”

प्रश्न पूछते हैं कौन हँसता है? तो उत्तर मिलता है। बालक तो यहा बालक (नाम) कर्ता है।यदि प्रश्न पूछते है ”बालक क्या हसता है?” तो कोई उत्तर नहीं मिलता। तो यहा कर्म नहीं है। जब प्रश्न पूछते हैं बालक क्या करता है? तो उत्तर मिलता है। हँसता है तो यहाँ हँसता है यह क्रिया है।

तो हमने दो प्रकार की क्रियाएं देखीं (१.) (सकर्मक) बालक पुस्तक पढ़ता है। और (२.) (अकर्मक) बालक हँसता है।

कोई भी भाषा का अर्थ पूर्ण वाक्य बनने के लिए वाक्य में एक या एक से अधिक शब्द होते है। और इन शब्दों को तीन प्रकार से विभाजित किया है। वह - नाम, क्रिया और अव्यय है। इसमें से नाम और क्रिया सर्वनाम, विशेषण और क्रियाविशेषण में भी विभाजित हो सकते है यह उपयोग कर्ता के उपर निर्भर है।